इस्लाम से संबंधित प्रचलित प्रश्नों के कोश से कुछ चुनिंदा प्रश्न

(भाग : ईमान)

महत्व (1)

प्रश्न 1- अल्लाह कौन है?

उत्तर 1 : इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह समस्त सृष्टि का रब है। वह अपनी नेमतों द्वारा उनका पालन-पोषण करता है। अल्लाह तआला ने कहा है :﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾ "हर प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है।"[सूरा अल-फ़ातिहा : 2]

वही सारी सृष्टियों का स्रष्टा, मालिक, आजीविका प्रदान करने वाला तथा सारी सृष्टियों का प्रबंधक है। उसका कोई साझी नहीं है। अल्लाह तआला ने कहा है :﴿رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا فَٱعۡبُدۡهُ وَٱصۡطَبِرۡ لِعِبَٰدَتِهِۦۚ هَلۡ تَعۡلَمُ لَهُۥ سَمِيّٗا﴾ "जो आकाशों और धरती का और उन दोनों के बीच की चीज़ों का रब है। अतः उसी की इबादत करें तथा उसकी इबादत पर दृढ़ रहें। क्या आप उसका समकक्ष किसी को जानते हैं?"[सूरा मरयम : 65]

वही अकेला पूज्य है। उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। क्योंकि पूज्य एवं संपूर्ण होने के गुण उसी के अंदर पाए जाते हैं। रचना करना, आदेश देना, निर्णय लेना तथा विधान बनाना सब उसी का काम है। उसका कोई साझी नहीं है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :﴿وَلَهُ ٱلۡمَثَلُ ٱلۡأَعۡلَىٰ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ﴾ "तथा आकाशों और धरती में सर्वोच्च गुण उसी का है।"[सूरा रूम : 27]

जो महान है, बड़ा है, हर तरह से संपूर्ण है, समस्त प्रशंसा उसी के लिए है और उसके उत्तम नाम तथा उच्च गुण हैं। अल्लाह तआला का कथन है :﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾ "और अल्लाह के लिए सम्पूर्ण सुंदरता वाले नाम हैं। अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो।"[सूरा अल-आराफ़ : 180]

वह संपूर्ण रूप से सब कुछ सुनने वाला, संपूर्ण रूप से सब कुछ देखने वाला, हर चीज़ का संपूर्ण ज्ञान रखने वाला और हर चीज़ की ऐसी शक्ति रखने वाला है कि कोई भी चीज़ उसके सामर्थ्य से बाहर नहीं है।वह ऐसा दयावान है कि उसकी दया प्रत्येक सृष्टि तथा प्रत्येक जीव तक पहुंचती है। वह विशेष रूप से मोमिनों के प्रति दयालु है।वह जीवित है, जिसे कभी मौत नहीं आ सकती। प्रथम है, जिससे पहले कुछ नहीं, एवं अंतिम है जिसके पश्चात कुछ नहीं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿هُوَ ٱلۡأَوَّلُ وَٱلۡأٓخِرُ وَٱلظَّٰهِرُ وَٱلۡبَاطِنُۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ﴾ "वही सबसे पहले है और सबसे आख़िर है और ज़ाहिर (दृश्यमान) है और पोशीदा (अदृश्य) है और वह हर चीज़ को भली-भाँति जानने वाला है।"[सूरा अल-हदीद : 3]

वह हिकमत वाला है, जिसने हर चीज़ को मज़बूती के साथ अच्छे अंदाज़ में पैदा किया है। उसकी हर रचना और हर आदेश में हिकमत छुपी है।

उसका समकक्ष कोई नहीं। न उसकी पत्नी है, न पुत्र है और न उसका पिता है। कोई चीज़ उसके जैसी नहीं है।वह पवित्र है। उसका फ़रमान है :﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ *ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ *لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُولَدۡ *وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ﴾ "(ऐ रसूल!) आप कह दीजिए : वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है। और न कोई उसका समकक्ष है।"[सूरा इखलास : 1-4]एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है :﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ

﴿ٱلۡبَصِيرُ﴾ "उसके जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।"[सूरा अल-शूरा : 11]

वह आकाश से बुलंद अर्श (सिंहासन) के ऊपर है। सारी सृष्टियों के ऊपर। अल्लाह तआला का कथन है :﴿ٱلرَّحۡمَٰنُ عَلَى ٱلۡعَرۡشِ ٱسۡتَوَىٰ﴾ "वह रहमान (अत्यंत दयावान् अल्लाह) अर्श (सिंहासन) पर बुलंद हुआ।"[सूरा ताहा : 5]

एक अन्य स्थान में कहा है :﴿وَهُوَ ٱلۡقَاهِرُ فَوۡقَ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡخَبِيرُ﴾ "और वही है जो अपने बंदों पर पूरा अधिकार रखता है एवं वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।"[सूरा अल-अनआम : 18]

महत्व (1)

प्रश्न 2- अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण क्या है?

उत्तर 2- अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण स्पष्ट विवेक, अविकृत प्रकृतियाँ तथा सीधे रास्ते हैं। इसका इनकार वही व्यक्ति करता है, जो अक़्ल के तक़ाज़ों पर अमल न करता हो।क्योंकि हम दुनिया में जिन सृष्टियों को देखते हैं, उनका आवश्यक रूप से एक स्रष्टा है। क्योंकि या तो यह सृष्टियाँ बिना किसी स्रष्टा के स्वयं ही वचूद में आ गईं हैं, जिसे विवेक आवश्यक रूप से गलत ठहराता है, इस लिए बिना किसी रचयिता के किसी भी चीज़ का पाया जाना असंभव है।या फिर इन सृष्टियों ने अपनी रचना स्वयं आप ही कर ली हो, जो कि बिल्कुल ही असंभव है, क्योंकि कोई भी चीज़ खुद को वजूद नहीं दे सकती।या इन सृष्टियों का कोई सृष्टा हो, जिसने इन्हें पैदा किया हो। दरअसल वही अल्लाह है, जो महान, सब कुछ जानने वाला और हिकमत वाला रचयिता है।अल्लाह ने इस तक़सीम को बड़े ही ख़ूबसूरत अंदाज़ में और बहुत ही संक्षिप्त में बयान किया है। उसने कहा है :{أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ} "या वे बिना किसी चीज़ के पैदा हो गए हैं, या वे (स्वयं को) पैदा करने वाले हैं? أَمْ خَلَقُوا

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بَل لَّا يُوقِنُونَ} या उन्होंने ही आकाशों और धरती को पैदा किया है? बल्कि वे विश्वास ही नहीं करते।"[सूरा अल-तूर : 35-36]इसी सिलसिले में किसी से पूछा गया :तुमने अपने रब को कैसे पहचाना? तो उसने कहा : जब ऊँट का गोबर ऊँट के वजूद की दलील होती है और पदचिह्न चलने वाले के प्रमाण होते हैं, तो क्या यह नक्षत्रों वाला आकाश, वादियों वाली धरती और मौजों वाले समुद्र किसी ऐसी हस्ती का प्रमाण नहीं हैं, जो सब कुछ देखने वाला और सब कुछ जानने वाला हो?

- इन सृष्टियों का एक प्रबंधक है, जो आवश्यक रूप से इनका प्रबंध करता है। क्योंकि अगर आप आकाश एवं धरती पर नज़र डालेंगे, तो उसमें आपको एक संपूर्ण एवं सुदृढ़ व्यवस्था नज़र आएगी। यहाँ हर चीज़ उचित रंग-रूप एवं आकार में बनी हुई मिलती है। हर चीज़ को उसके हितों और उसके अस्तित्व की रक्षा का मार्ग दिखा दिया गया है।यह सुदृढ़ व्यवस्था सारी सृष्टियों में अनगिनत रंग-रूप में नज़र आथी है। यह संपूर्णता सारी सृष्टियों में देखी जा सकती है जिन के अनगिनत रूप तथा आकार हैं। इसलिए यह सब कुछ अचानक तथा बिना किसी प्लानिंग के हो जाने का मत असंभव और नामुम्किन मालूम होता है।अल्लाह तआला ने भी इस ओर ध्यान ध्यान दिलाते हुए कहा है :{صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ} "उस अल्लाह की कारीगरी, जिसने हर चीज़ को मज़बूत बनाया।"[सूरा अल-नम्ल : 88]

एक अन्य स्थान में कहा है :{قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى} "उन्होंने कहा : हमारा रब वह है जिसने हर एक को उसका विशेष रूप दिया, फिर मार्गदर्शन किया।"[सूरा ताहा : 50]कहा जाता है कि कुछ नास्तिक इमाम अबू हनीफा के पास आए और पूछा कि स्रष्टा के अस्तित्व का प्रमाण क्या है? तो उन्होंने उत्तर दिया : अभी रुक जाओ, मेरा दिल इस समय एक अद्भुत विचार में पड़ा हुआ है। उन्होंने पूछा : कैसा विचार? तो उत्तर दिया : मुझे मालूम हुआ है कि

दिजला (नदी) में विभिन्न प्रकार के अच्छे-अच्छे सामानों से लदा हुआ एक बड़ा जहाज़ बिना किसी चालक तथा कप्तान के आ जा रहा है।

यह सुन नास्तिक कहने लगे : आप पागल तो नहीं हैं? उन्होंने पूछा कि क्यों? तो जवाब दिया कि क्या कोई ज्ञानी व्यक्ति इसे सच मान सकता है? उनकी बय बात सुनने के बाद इमाम अबू हनीफ़ा ने उनसे कहा : जब ऐसा नहीं हो सकता, तो फिर तुम्हारे विवेकों ने कैसे मान लिया कि इस दुनिया का कोई पैदा करने वाला नहीं है, जिसमें तरह-तरह की अद्भुत घटनाएँ घटती हैं और इस ब्रह्मांड के सारे ग्रह बिना किसी चलाने वाले के चल रहे हैं और उनके अंदर की सारी घटनाएँ बिना किसी व्यवस्थापक के घट रही हैं? इमाम साहब का तर्क सुनने के बाद वह खुद को कोसने लगे।

- रब के अस्तित्व के प्रमाण इससे कहीं ज़्यदा हैं कि उनको गिना जा सके। मसलन :फ़ितरत (प्रवृत्ति)प्रवृत्ति एक प्राकृतिक विषय है, जिसे इन्सान अपने अंदर महसूस करता है और उसे अस्वीकार नहीं कर सकता।दूसरी बात यह है कि हर सृष्टि इस बात का प्रमाण है कि उसका कोई न कोई स्रष्टा होगा।तीसरी बात यह है कि इस ब्रह्मांड की हर वस्तु की संपूर्ण देखभाल, उसकी सुदृढ़ रचना और उसे इन्सान के काम में लगा देना आदि बेशुमार चीज़ें अल्लाह के वजूद का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं, जो एक महान स्रष्टा और हिकमत वाला संचालक है।

महत्व (1)

प्रश्न 3 : अल्लाह तआला की तौहीद के आवश्यक होने का प्रमाण क्या है?

उत्तर 3 : इस बात का प्रमाण कि अल्लाह तआला ही अकेला रब है, अर्थात; वही स्रष्ठा, मालिक तथा प्रबंधक है और उसका कोई साझी नहीं।

इस प्रकार की एक दलील अल्लाह तआला का यह कथन है :﴿ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذًا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴾ "न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और न उसके साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अपनी उत्पत्ति को लेकर अलग हो जाता और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से, जो यह लोग बनाते हैं।"[सूरा अल-मोमिनून : 9]

इस आयत में जो प्रमाण है, उसे उलेमा दलील-अत्तामानु,अ (काट करने और रोकने वाला प्रमाण) कहते हैं। यानी अगर हम यह मान लें कि अल्लाह के साथ-साथ अन्य पूज्य भी हैं, तो यह अन्य पूज्य:या तो अल्लाह को पूज्य मानेंगे या खुद को पूज्य स्थापित करना चाहेंगे।पहली कल्पना के अनुसार उन पूज्यों का पूज्य होना रद्द हो जाता है; क्योंकि जो अधीन हो वह उपासक होता है, उपास्य नहीं। दूसरी सूरत यह है कि ये पूज्य अल्लाह से बादशाहत के मामले में उलझे हुए हों। अगर ऐसा होता, तो इस टकराव का प्रभाव सारे संसार में प्रकट होता और प्रत्येक पूज्य अपनी पैदा की हुई चीज़ों को लेकर अलग-अलग खड़ा हो जाता।ऐसे में तुम्हें प्रत्येक पूज्य का राज्य दूसरे पूज्यों से अलग दिखाई देता और वह एक-दूसरे को पराजित करने के प्रयास में लग जाते, जैसा कि तुम दुनिया के राजाओं को देखते हो कि उनके राज्य अलग अलग हैं और वे एक-दूसरे को पराजित करने के प्रयास में लगे रहते हैं। अतः यदि राज्य के अलग-अलग होने और पूज्यों के एक-दूसरे को पराजित करने का कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता, तो इस कायनात में पूज्य केवल एक ही है, जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है।

अब यदि कोई कहे कि पूज्यों के बीच एक प्रकार की संधि हो गई है और प्रत्येक पूज्य बिना किसी लड़ाई के अपनी उत्पत्ति लेकर अलग हो गया है, तो यह भी उनके पूज्य न होने का सबसे बड़ा प्रमाण

होगा; क्योंकि इस प्रकार से प्रत्येक पूज्य उस हिस्से का पूज्य नहीं होगा, जिसकी रचना उसने नहीं की होगी।एवं इसका अर्थ होगा कि प्रत्येक पूज्य में कमी है, जो कि असंभव है; क्योंकि पूज्य होने का मलतब यह है कि उसे परिपूर्ण होना चाहिए और उसके अंदर कोई कमी नहीं होनी चाहिए।

-इस बात का प्रमाण कि अकेला अल्लाह तआला ही उपासना के योग्य है। अर्थात ज़ाहिरी और बातिनी सारी इबादतें, जैसे नमाज़, दुआ, दीनता, भरोसा, अधीनता, डर, आशा, ज़बह करना, मन्नत मानना, सहायता मांगना, शरण मांगना और आपदा में पुकारना आदि केवल अल्लाह के लिए की जाएँगी। किसी और के लिए नहीं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ﴾ "हे लोगो, केवल अपने उस रब की इबादत करो, जिसने तुम्हें तथा तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव है।"[सूरा अल-बक़रा : 21]

अतः रब (स्रष्टा, पालनहार, प्रबंधक) ही उपासना के योग्य है और बाकी सारी चीज़ें उसकी सृष्टि एवं पालित हैं। इबादत की हक़दार नहीं।

अल्लाह तआला ने मुशरिकों के अल्लाह तआला को छोड़ दूसरे पूज्य बनाने का बहुत सारे तार्किक प्रमाणों से खंडन किया है। जैसे :इन पूज्यों में पूज्य होने की कोई भी विशेषता नहीं है; क्योंकि यह सब सृष्टियां हैं, जो न कोई चीज़ पैदा कर सकती हैं, न अपने उपासकों का भला कर सकती हैं, न उनसे कोई क्षति दूर कर सकती हैं, न जीने -मरने पर उनका नियंत्रण है और न ही वे आकाशों तथा धरती में किसी चीज़ की मालिक हैं।

इसका एक और प्रमाण अल्लाह तआला का यह कथन है :﴿ وَٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةٗ لَّا يَخۡلُقُونَ شَيۡـٔٗا وَهُمۡ يُخۡلَقُونَ وَلَا يَمۡلِكُونَ لِأَنفُسِهِمۡ ضَرّٗا وَلَا نَفۡعٗا

﴿وَلَا يَمۡلِكُونَ مَوۡتٗا وَلَا حَيَوٰةٗ وَلَا نُشُورٗا﴾ "और उन्होंने उसके अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिए हैं, जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते और वे स्वयं उत्पन्न किए जाते हैं और न वे अपने लिए किसी हानि का अधिकार रखते हैं न किसी लाभ का, न अधिकार रखते हैं मरण का, न जीवन का और न पुनः जीवित करने का।"[सूरा अल-फ़ुरक़ान : 3]

उसका यह कथन भी :﴿قُلِ ٱدۡعُواْ ٱلَّذِينَ زَعَمۡتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِۖ لَا يَمۡلِكُونَ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا لَهُمۡ فِيهِمَا مِن شِرۡكٖ وَمَا لَهُۥ مِنۡهُم مِّن ظَهِيرٖ﴾ "(ऐ नबी) आप कह दें : उन्हें पुकार कर देखो, जिन्हें तुमने अल्लाह के सिवा (पूज्य) समझ रखा है। वे आकाशों और धरती में कण भर भी अधिकार नहीं रखते, और न उन दोनों में उनकी कोई साझेदारी है और न उनमें से कोई उस (अल्लाह) का सहायक ही है।"[सूरा सबा : 22]

और उसका यह कथन भी :﴿أَيُشۡرِكُونَ مَا لَا يَخۡلُقُ شَيۡـٔٗا وَهُمۡ يُخۡلَقُونَ﴾ "क्या वे अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते और वे स्वयं पैदा किए जाते हैं?"[सूरा आ'राफ़ : 191]

अर्थात क्या यह मुशरिक अल्लाह की इबादत में उसकी सृष्टियों को साझी बनाते हैं, जो कि कुछ भी पैदा करने की क्षमता नहीं रखती हैं, बल्कि खुद किसी और के द्वारा पैदा की गई हैं?

उन पूज्यों का अगर यह हाल है, तो उन्हें पूज्य मानना सबसे बड़ी बेवकूफी और सबसे बड़ा झूठ है।

- नामों तथा गुणों में अल्लाह को अकेला मानने की आवश्यकता का प्रमाण यह है कि हम जानें कि स्रष्टा तथा सृष्टि एक नहीं हैं।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾ "उसके जैसी कोई चीज़ नहीं है और वह सब कुछ सुनने तथा देखने वाला है।"[सूरा अल-शूरा : 11]

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞ﴾ "उसके जैसी कोई नहीं है।"अर्थात उसकी सृष्टियों में उसके जैसा कोई नहीं है। न उसकी ज़ात में, न नामों में, न गुणों में और न ही उसके कर्मों में; क्योंकि उसके सारे नाम उत्तम हैं और उसके गुण संपूर्णता तथा महानता के गुण हैं और उसके कर्मों में से यह है कि उसने बिना किसी की सहायता के बड़ी-बड़ी सृष्टियों की रचना की है। अतः उसके जैसा कोई नहीं; क्योंकि हर तरह से संपूर्ण होना केवल उसी का गुण है।

जो नाम तथा गुण शरीयत से प्रमाणित हैं, उनका एक तार्किक प्रमाण यह है कि :

1- इन बड़ी-बड़ी भांत-भांत की सृष्टियों का नियमित रूप से अपने-अपने हित में काम करना एवं अपने निर्धारित मार्गों पर चलना अल्लाह की महानता, क्षमता, ज्ञान, हिकमत तथा इच्छा के अस्तित्व का प्रमाण है।

2. उपकार करना, एहसान करना एवं आपादाओं तथा कठिनाइयों को दूर करना; यह सारी बातें दया तथा दानशीलता का प्रमाण हैं।

3- पापियों को दंड देना तथा उनसे प्रतिशोध लेना; अल्लाह के उनपर क्रोधित होने एवं उनसे नफरत करने की दलील है।

4- आज्ञाकारियों को सम्मानित करना एवं उन्हें पुण्य देना इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करता है कि अल्लाह तआला उनके प्रति संतुष्ट है एवं उनसे प्रेम करता है।

अल्लाह तआला ने कहा है :﴿وَلَهُ ٱلۡمَثَلُ ٱلۡأَعۡلَىٰ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾ "और उसी के लिए सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धर्ती में और वही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।"[सूरा अल-रूम : 27] यानी अल्लाह के जो भी गुण बयान किए जाते हैं, उनमें वह संपूर्ण है। उसके जैसा कोई नहीं है। दरअसल यह असंभव है कि सर्वोच्च गुणों

में दो लोग भागीदार हों; क्योंकि यदि वे दोनों समकक्ष हों, तो उनमें से एक दूसरे से ऊँचा नहीं होगा और अगर दोनों बराबर न हों, तो सबसे ऊँचे गुण किसी एक के ही होंगे। इसलिए यह एसंभव है कि सर्वोच्च गुण रखने वाले के जैसा कोई और मौजूद हो।

महत्व (1)

प्रश्न 4 - अल्लाह ने हमें क्यों पैदा किया है और हमारे अस्तित्व का उद्देश्य क्या है?

उत्तार 4 - सब कुछ जानने वाले और हर चीज़ की ख़बर रखने वाले अल्लाह ने हमें बता दिया है कि हमें पैदा करने के पीछे क्या राज़ है और हमें अस्तित्व में लाने का क्या उद्देश्य है? अल्लाह तआला ने अपने सम्मानित पुस्तक कुरआन में कहा है :﴿ وَمَا خَلَقۡتُ ٱلۡجِنَّ وَٱلۡإِنسَ إِلَّا لِيَعۡبُدُونِ﴾ "और हमने जिन्नों तथा इन्सानों को केवल अपनी इबादत (उपासना) के लिए पैदा किया है।"[सूरा अल-ज़ारियात : 56]

यही वह उद्देश्य है, जिसके कारण अल्लाह ने जिन्नों तथा इन्सानों को पैदा किया और तमाम रसूलों को उसका आह्वान करने के लिए भेजा। उद्देश्य अल्लाह की इबादत है, जिसमें उसका ज्ञान, उससे प्रेम, उसकी ओर लौटना और उसके सिवा दूसरों से मुँह मोड़ना शामिल है।

अतः जिसने इस उद्देश्य से मुँह मोड़ा, वह अल्लाह की यातना का शिकार हो गया और जिसने अल्लाह के आदेशों का पालन किया, वह हमेशा रहने वाले अज़ाब का हक़दार बन गया। अल्लाह तआला ने कहा है :﴿ مَنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَلَنُحۡيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةٗ طَيِّبَةٗۖ وَلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ أَجۡرَهُم بِأَحۡسَنِ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ﴾ "जो भी अच्छा कार्य करे, नर हो अथवा नारी, जबकि वह ईमान वाला हो, तो हम उसे अच्छा जीवन व्यतीत कराएँगे। और निश्चय हम उन्हें उनका बदला उन उत्तम

कार्यों के अनुसार प्रदान करेंगे, जो वे किया करते थे।"[सूरा अल-नह्ल : 97]

महत्व (2)

प्रश्न 5 - अल्लाह को किसने पैदा क्या?

उत्तर 5 : यह प्रश्न ही गलत है; क्योंकि यदि हम केवल तर्क के लिए यह मान भी लें कि अल्लाह का भी कोई स्रष्टा है, तो कोई यह भी पूछ सकता है कि स्रष्टा के स्रष्टा को किसने पैदा किया? फिर स्रष्टा के स्रष्टा के स्रष्टा को किसने पैदा किया? सवालों का यह सिलसिला कभी खत्म ही नहीं होगा।

मानव विवेक इस बात को असंभव मानता है।

जो सिद्धांत विवेक तथा तर्क के अनुकूल है, वह यह कि इन सारी सृष्टियों का एक स्रष्टा है, जिसने इन्हें पैदा किया है और उसे किसी ने नहीं पैदा किया, बल्कि वही अपने अलावा सारी वस्तुओं को पैदा करने वाला है और वही सत्य पूज्य है।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह कथन है :﴿هُوَ ٱلۡأَوَّلُ وَٱلۡأٓخِرُ وَٱلظَّٰهِرُ وَٱلۡبَاطِنُۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ﴾ "वही सबसे पहले है और सबसे आख़िर है और ज़ाहिर (दृश्यमान) है और पोशीदा (अदृश्य) है और वह हर चीज़ को भली-भाँति जानने वाला है।"[सूरा अल-हदीद : 3]

इस आयत की व्याख्या अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस में है :"ऐ अल्लाह! तू ही प्रथम है अतः तुझसे पहले कुछ नहीं, और तू ही अंतिम है अतः तेरे पश्चात कुछ नहीं है।"इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इसी तरह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस से भी इस आयत की व्याख्या होती है :"अल्लाह तआला मौजूद था और उसके अतिरिक्त कोई चीज़ नहीं थी।"जबकि एक

रिवायत में है :"और उससे पहले कोई चीज़ नहीं थी।"इन दोनों को हदीसों को इमाम बुखारी ने रिवायत किया है।

यह इस प्रश्न का पहला उपचार है।

-इसका एक और इलाज भी है, जैसा कि हदीसों में आया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :"लोग पूछते-पूछते इस प्रश्न तक पहुँच जाएँगे कि अल्लाह ने सबको पैदा किया, तो अल्लाह को किसने पैदा किया? अतः जिसके मन में ऐसी कोई बात आए, तो वह कहे; कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया।"

इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है :"शैतान तुममें से किसी के पास आकर उससे कहता है कि आकाश को किसने पैदा किया? धरती को किसने बनाया? वह कहता है : अल्लाह ने।" -फिर उपरोक्त हदीस के जैसी बातों का उल्लेख किया और अंत में यह शब्द बढ़ाया : "और उसके रसूलों पर (ईमान लाया)।"

इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है :"शैतान तुममें से किसी के पास आकर कहता है कि इस और इस चीज़ को किसने पैदा किया? यहाँ तक कि आगे बढ़कर उससे कह देता है कि तेरे रब को किसने पैदा किया है? यदि कोई व्यक्ति इस सीमा तक पहुँच जाए, तो वह रुक जाए एवं अल्लाह की शरण माँगे।"

इन हदीसों को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इन हदीसों में बताया गया है कि

इस प्रश्न का स्रोत क्या है। इसका स्रोत दरअसल शैतान है। साथ ही इसका उपचार तथा इससे बचाव का तरीक़ा भी बताया गया है, जो कुछ इस तरह है :

1- इन बुरे ख़्यालों के पीछे भागने और खुद को शैतान के धोखे में आने से बचाए।

2- दिल में इस तरह का ख़्याल आने पर "मैं अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान लाया" कहे।

3- शैतान से बचने के लिए अल्लाह की शरण ले।

हदीस में यह भी आया है कि बाईं तरफ तीन बार थुत्कारे और सूरा "क़ुल हुवल्लाहु अहद" पढ़े।

इस उत्तर के अंत में अल्लाह तआला ने कहा है :﴿ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمۡۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖ فَٱعۡبُدُوهُۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ وَكِيلٞ﴾ "वही अल्लाह तुम्हारा रब है। उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उसकी इबादत करो। और वह हर चीज़ का अभिरक्षक है।"[सूरा अल-अनआम : 102]

महत्व (1)

प्रश्न 6 : बुराई क्यों पैदा की गई?

उत्तर 6 : यह प्रश्न पूछना कि अल्लाह ने बुराई क्यों पैदा की अथवा इस बात पर आपत्ति करना ही उचित नहीं है; क्योंकि अल्लाह तआला स्रष्टा है और उसे उसके कर्मों के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा, बल्कि वही प्रश्न पूछेगा। अल्लाह तआला ने कहा है :﴿لَا يُسۡـَٔلُ عَمَّا يَفۡعَلُ وَهُمۡ يُسۡـَٔلُونَ﴾ "वह जो करता है, उसके बारे में उससे नहीं पूछा जाएगा, जबकि लोगों से उनके कर्मों के बारे में सवाल किया जाएगा।"[सूरा अल-अंबिया : 23]लेकिन यदि अच्छाई और बुराई के होने की कुछ हिकमतों की बात की जाए, तो वो इस प्रकार हैं :

- अच्छाई और बुराई के द्वारा बंदे की परीक्षा लेना, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन धैर्यवान है और कौन मोमिन है। अल्लाह तआला ने कहा है :﴿ٱلَّذِي خَلَقَ ٱلۡمَوۡتَ وَٱلۡحَيَوٰةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ أَيُّكُمۡ أَحۡسَنُ عَمَلٗاۚ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ

ٱلۡغَفُورُ﴾ "जिसने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें किसका कर्म अधिक अच्छा है? एवं वह प्रभुत्वशाली, अति क्षमावान है।"[सूरा अल-मुल्क : 2]

एक अन्य स्थान में उसने कहा है :﴿وَنَبۡلُوكُم بِٱلشَّرِّ وَٱلۡخَيۡرِ فِتۡنَةٗۖ وَإِلَيۡنَا تُرۡجَعُونَ﴾ "और हम तुम्हारी परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी परिस्थितियों से एवं तुम्हें हमारी ही ओर फिरकर आना है।"[सूरा अल-अमबिया : 35]

अल्लाह तआला ने दुनिया में अपने बंदों को पैदा किया है, उन्हें कुछ बातों का आदेश दिया है, कुछ बातों से रोका है एवं अच्छाई, बुराई, धन, निर्धनता, सम्मान, अपमान एवं जीवन तथा मौत से उनकी परीक्षा ली है, ताकि पता चले कि उनमें किसका कर्म अधिक अत्तम है और फितने के समय कौन फितने में पड़ता है और कौन बच निकलता है।﴿وَإِلَيۡنَا تُرۡجَعُونَ﴾ "और तुम्हें हमारी ओर फिरकर आना है।"तब हम तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देंगे। अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा।﴿وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّٰمٖ لِّلۡعَبِيدِ﴾. "और आपका रब बंदों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है।"

- कायनात में हर चीज़ के दो-दो होने के सिद्धांत को क़ायम रखना; क्योंकि बुराई के बिना अच्छाई की पहचान नहीं होगी। कोई चीज उसके विपरीत चीज़ के होने की वजह से ही अलग होती है। भलाई के लिए बुराई का होना जरूरी है; क्योंकि यह उसके विरुद्ध लड़ाई है। बुराई और अच्छाई का होना और उन दोनों से इन्सान का दोचार होना इस जीवन की प्रकृति है।

- बुराई एक सापेक्ष वस्तु है; क्योंकि एक ही चीज़ किसी की नज़र में अच्छी होती है और किसी की नज़र में बुरी। जैसा कि चोर का हाथ काटना चोर के लिए तो बुरा है, लेकिन इसमें समाज का कल्याण

निहित है; क्योंकि इसका नतीजा यह होगा कि लोग एक-दूसरे की संपत्ति को हाथ नहीं लगाएँगे।

- बंदे की न्यायपूर्ण परीक्षा के वास्तविक अर्थ को पूरा करना; वह इस तरह कि अल्लाह तआला ने इन्सान के सामने बुराई और अच्छाई के रास्ते को स्पष्ट कर दिया है और उसे दोनों में से किसी एक रास्ते को चुनने की आज़ादी दे दी है।

अल्लाह ने कहा है :﴿أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ "क्या हमने उसकी दो आंखें नहीं बनाईं?وَلِسَاناً وَشَفَتَيْنِ और ज़बान और दो होंट (नहीं बनाए)?وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ﴾ और उसे दोनों मार्ग दिखा दिए।"[सूरा अल-बलद : 8-10]अर्थात क्या हमने उसकी दो आंखें नहीं बनाईं, जिनसे वह देखता है, एक ज़बान और दो होंट नहीं बनाए, जिनसे वह बातें करता है एवं क्या हमने उसके सामने अच्छाई और बुराई के रास्ते को स्पष्ट नहीं किया?

- बहुत-सी बुरी चीज़ें, जिन्हें हम देखते हैं, हर दृष्टिकोण से बुरी नहीं होतीं, बल्कि उनमें अच्छाई के पहलू भी होते हैं। कितनी ही ऐसी बुराइयाँ हैं, जिनमें बहुत-सी अच्छाइयाँ छुपी होती हैं। जैसे इन्सान को कभी कोई बीमारी हो जाती है और उसके कारण वह उससे बड़े किसी नुक़सान से बच जाता है। इसी तरह कभी-कभी इन्सान को किसी तिजारत में घाटा हो जाता है, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि यदि मुनाफ़ा होता, तो शायद वह अवज्ञा और अत्याचार के मार्ग पर चल पड़ता। ऐसे ही कभी-कभी किसी के बच्चे की मौत हो जाती है, जो जीवित रहने पर शायद उसके लिए वबाल-ए-जान बन जाता।कभी-कभी इन्सान अपने बुरे कर्मों के कारण जहन्नम (नरक) का हक़दार बन जाता है, जो की वास्तविक आपदा है। फिर अल्लाह तआला उसे किसी मुसीबत में डालता है और वह सब्र से काम लेता

है, जिसके बदले के तौर पर अल्लाह उसे जन्नत प्रदान करता है, जो कि स्थायी तथा वास्तविक कल्याण है।

अतः अल्लाह तआला निरी बुराई नहीं पैदा करता और बुराई से उसका संबंध नहीं जोड़ा जाएगा, जैसे कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है :"और बुराई का संबंध तुझसे नहीं है।"इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

- बुराई और अच्छाई के पाए जाने में एक हिकमत अल्लाह की परस्पर विपरीत तथा विरोधाभासी चीजों के पैदा करने की क्षमता तथा उसके प्रभुत्वबोधक नामों के प्रभावों का प्रकट होना भी है। अर्थात अल्लाह तआला अपने नामों तथा कर्मों के प्रभावों को प्रकट करता है, जैसे कि वह प्रभुत्वशाली, प्रतिशोधी तथा न्यायकारी आदि है। अल्लाह तआला ने कहा है :﴿ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ سَبۡعَ سَمَٰوَٰتٍ وَمِنَ ٱلۡأَرۡضِ مِثۡلَهُنَّۖ يَتَنَزَّلُ ٱلۡأَمۡرُ بَيۡنَهُنَّ لِتَعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىۡءٖ قَدِيرٞ وَأَنَّ ٱللَّهَ قَدۡ أَحَاطَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عِلۡمَۢا﴾ "अल्लाह ही है, जिसने सात आकाश बनाए तथा धरती से भी उन्हीं के समान। उनके बीच आदेश उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है और यह कि अल्लाह ने निश्चय प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान के साथ घेर रखा है।"[सूरा अल-तलाक़ : 12]

स्वयं बुराई ही लक्ष्य नहीं है और न ही बुराई के लिए सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, बल्कि किसी प्रिय वस्तु तक पहुंचाने के लिए इन बुराइयों का फैसला किया गया है। अतः जब वह वस्तु प्राप्त हो जाएगी, तो इन बुराइयों का नाम व निशान मिट जाएगा और केवल अच्छाई बाक़ी रह जाएगी।कोई व्यक्ति बुराई के वजूद की हिकमत उस समय तक समझ नहीं सकता, जब तक उसके अंदर यह विश्वास न हो कि यह दुनिया अस्थायी है, परीक्षा और कमियों की जगह है और जो इस पृथ्वी में संपूर्णता देखने की प्रतीक्षा कर रहा है, वह वास्तव में

अल्लाह तआला की उस हिकमत का विरोध कर रहा है, जिसके अनुसार आख़िरत ही संपूर्णता का स्थान है।

अल्लाह ने ईमान वाले के बारे में कहा है :﴿ يَٰقَوۡمِ إِنَّمَا هَٰذِهِ ٱلۡحَيَوٰةُ ٱلدُّنۡيَا مَتَٰعٞ وَإِنَّ ٱلۡأٓخِرَةَ هِيَ دَارُ ٱلۡقَرَارِ﴾ "ऐ मेरी जाति के लोगो! यह सांसारिक जीवन तो मात्र कुछ दिनों का लाभ है और निःसंदेह स्थायी निवास का स्थान तो आख़िरत ही है।"[सूरा ग़ाफ़िर : 39]

महत्व (1)

प्रश्न 7 : तौहीद तथाा ईमान के विषयों में दिल में आने वाले बुरे ख़्यालों का उपचार क्या है?

उत्तर 7 : दिल में आने वाले बुरे ख़्यालों का उपचार इस प्रकार होगा :

- मोमिन खुद को ज्ञान के द्वारा सुरक्षित करे; क्योंकि जिन्नी तथा इन्सानी शैतानों के इन्सान तक पहुंचने का रास्ता अज्ञानता है।

- अल्लाह को स्मरण करना एवं शैतान से उसकी पनाह मांगना।

- दिल में आने वाले बुरे ख़्यालों में पड़े न रहना और उनसे ख़ुद को अलग कर लेना।

- उलेमा से पूछना। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ فَسۡـَٔلُواْ أَهۡلَ ٱلذِّكۡرِ إِن كُنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ﴾ "तो तुम ज्ञानियों से पूछ लो यदि तुम नहीं जानते।"[सूरा अल-नह्ल : 43]

इस्लाम से संबंधित प्रचलित प्रश्नों के कोश से कुछ चुनिंदा प्रश्न.....1
प्रश्न 1- अल्लाह कौन है?.....1
प्रश्न 2- अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण क्या है? 3
प्रश्न 3 : अल्लाह तआला की तौहीद के आवश्यक होने का प्रमाण क्या है?.....5
प्रश्न 4 - अल्लाह ने हमें क्यों पैदा किया है और हमारे अस्तित्व का उद्देश्य क्या है?.....10
प्रश्न 5 - अल्लाह को किसने पैदा क्या?.....11
प्रश्न 6 : बुराई क्यों पैदा की गई?.....13
प्रश्न 7 : तौहीद तथाा ईमान के विषयों में दिल में आने वाले बुरे ख़्यालों का उपचार क्या है?.....17